दिव्य शक्ति का संचालन सीखें

जिस दिन आपने अपने अन्दर की दिव्य शक्ति को पहचान लिया, उसे संचालित करना सीख लिया सफलता आपके कदम चूमेगी, हर प्रकार का ज्ञान आपके अन्दर होगा। अपने अन्दर दिव्य शक्ति की खोज का सबसे सरल रास्ता है दूसरों के दुःख का अनुभव करना, उसे दूर करना और उसे सुख पहुंचाना।

■ **डॉ. अशोक जैनर, लंदन से**

मनुष्य को सर्वोतम प्राणी इसलिए माना गया है क्योंकि केवल मनुष्य ही अपने अन्दर दिव्य शक्ति को पहचान सकता है, उसका अनुभव कर सकता है तथा दिव्य शक्ति का संचालन कर सकता है। इस दिव्य शक्ति के होते हुए मनुष्य के लिए संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है ''अपने आपको कमजोर व असहाय समझना सबसे बड़ा पाप है।'' क्योंकि हर व्यक्ति के अन्दर दिव्य शक्ति है। हम तब तक ही असहाय, दुःखी व कमजोर हैं जब तक अपने अन्दर दिव्य शक्ति से परिचित नहीं हो पाते। प्रत्येक व्यक्ति में इस दिव्य शक्ति से परिचित होने की क्षमता है। इस दिव्य शक्ति को अपने अन्दर अनुभव करना तथा संचालित करना जीवन की सबसे बड़ी खोज है, सबसे बड़ा आविष्कार, सबसे बड़ी विद्या है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि यदि मुझे दोबारे जन्म लेना पड़े तब मैं केवल अपने अन्दर दिव्य शक्ति को अनुभव करने की विधि का अभ्यास करूंगा। इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं। इसका अर्थ है कि यदि आपने अपने अन्दर दिव्य शक्ति को पहचान लिया, उसे संचालित करना सीख लिया तब दुनिया का हर कार्य आप कर सकते हैं। सफलता आपके कदम चूमेगी। हर प्रकार का ज्ञान आपके अन्दर होगा। स्वयं आप ईश्वर में स्थित रहेंगे। आप का स्वरूप ईश्वरीय स्वरूप होगा। अपने अन्दर दिव्य शक्ति की खोज का सरल रास्ता है दूसरों के दुःख का अनुभव करना, दूसरों के दुःख को दूर करना, दूसरों को सुख देना। इस रास्ते पर जैसे आप चलना शुरू करेंगे कुछ समय बाद आपके अन्दर की दिव्य शक्ति से आपको स्वयं परिचय होने लगेगा। यह सबसे आसान रास्ता है। इस रास्ते पर चलकर ''मदर टेरेसा'' तथा गांधीजी ने अपने अन्दर की दिव्य शक्ति को महसूस किया तथा उसे विकसित किया। जैसे ही दिव्य रूप व दिव्य शक्ति का संचालन शुरू होता है। जैसे ही दिव्य शक्ति का आपको अनुभव होता है, आपके मन की स्थिति ऐसी हो जाती है जैसे की दीपक की ज्योति बिना हवा के स्थिर रहती है। मन बिल्कुल स्थिर रहता है। जब स्थिर मन में दिव्य शक्ति का अनुभव होगा उस समय ऐसा महसूस होगा जैसे कि आपका संबंध ईश्वरीय शक्ति से जुड़ गया हो। उस समय अपने अन्दर एक प्रकार का

आत्मविश्वास पैदा होता है। यह विश्वास आपको तनाव नहीं होने देगा, यह विश्वास मन में थकावट नहीं होने देगा। यह विश्वास दिव्य शक्ति का प्रतीक है। यह विश्वास ही ब्रह्माण्ड की शक्ति है।

जैसे-जैसे आप इस दिव्य शक्ति का संचालन करने का अभ्यास करते जाएंगे वैसे-वैसे आप असंभव दिखने वाले कार्य संभव करते चले जाएंगे। इस दिव्य शक्ति के संचालन के कारण एक साधारण व्यक्ति असधारण कार्य आसानी से करने लगता है। जैसे महात्मा गांधी ने आजादी दिलायी। महात्मा गांधी को दिव्य शक्ति का संचालन करना आता था। दुनिया की बड़ी-बड़ी खोज भी इस दिव्य शक्ति के संचालन के द्वारा हुई। दिव्य शक्ति के संचालन की एक और आसान विधि है। कार्य करते समय आप कार्य यह सोंचकर करें कि आप इसे भगवान के लिए कर रहे हैं। आपने यह कार्य भगवान को समर्पित कर दिया है। ऐसा करने से आपके मन का स्वार्थ हट जाएगा तथा आपका संबंध आपके अन्दर दिव्य शक्ति से स्थापित हो जाएगा। संबंध स्थापित होने की पहचान है कि आपके अन्दर विश्वास का पैदा होना तथा कार्य करते समय मन में तनाव व थकावट का ना होना। इसका आपको काफी अभ्यास करना होगा। पहला चरण बार-बार दिव्य शक्ति को पहचानना तथा अनुभव करना। दूसरा चरण इस शक्ति को संचालित करना। जैसे-जैसे आप इसको अनुभव करेंगे वैसे-वैसे ही इच्छा शक्ति का संचार होता जाएगा। यह इच्छा शक्ति दिव्य शक्ति का एक प्रकार का उपहार है। जितना अधिक आप दिव्य शक्ति को अनुभव करेंगे उतना ही अधिक आपकी इच्छा शक्ति बढ़ती जाएगी। यह इच्छा शक्ति आपको एक ऐसा उपहार है जिसके द्वारा आप कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं तथा इसे आपसे कोई दूर भी नहीं कर सकता। इच्छा शक्ति आपका एक ऐसा उपहार है जिसके द्वारा आप बिना किसी हथियार के बिना किसी सेना के युद्ध जीत सकते हैं, जैसे गांधी ने जीता था। आपको जीवन में ऐसी आदत डालनी है कि आप रोज दूसरों को सुख देते जाएं, दूसरों का दुःख दूर करते जाएं, दूसरों के दुख को व सुख को अनुभव करते जाएं। ऐसा करते समय ध्यान रहे आपको बिना किसी स्वार्थ के ऐसा करना है। धीरे-धीरे आपको दिव्य शक्ति, इच्छा शक्ति अपने आप महसूस होने लगेगी। आपका जीवन बदलने लगेगा। आप आसानी से असाधारण कार्य करने लगेंगे। इसके साथ-साथ आपको जीवन का मूल रहस्य समझ में आने लगेगा। जीवन का रहस्य यही है कि सभी कार्य को यह दिव्य शक्ति ही करती है। हम तो केवल माध्यम है। यह दिव्य शक्ति ही कर्ता है। यह जीवन का एक रहस्य है। जितना हम जीवन में निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं उतना ही दिव्य शक्ति का हमारे अन्दर संचार बढ़ता है। ■■